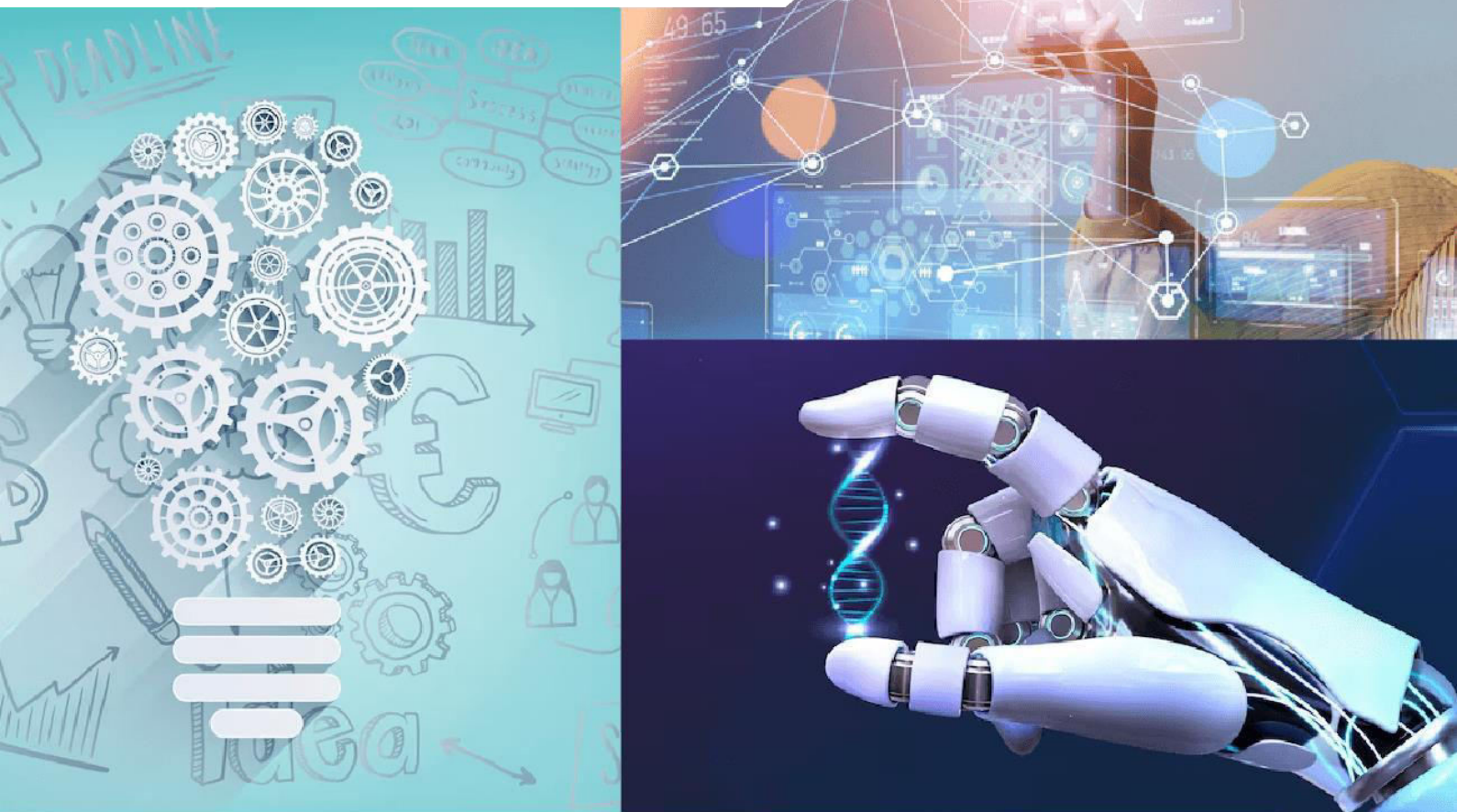




International Journal of Advanced Research in Education and Technology (IJARETY)

Volume 12, Issue 4, July - August 2025

Impact Factor: 8.152



हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की प्रासंगिकता एवं साहित्यिक स्वीकार्यता

अमिता जैन

सह आचार्य, हिंदी साहित्य

राजकीय कन्या महाविद्यालय, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर

सारांश

लोक साहित्य भारतीय सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण और जीवंत अंग है। इसमें समाज की मूल संवेदना, सांस्कृतिक परंपराएँ, लोक-विश्वास, आस्थाएँ, जीवन-अनुभव और सामूहिक चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। लोक साहित्य सामान्य जनजीवन से उत्पन्न होता है और प्रायः मौखिक परंपरा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है। इसी कारण इसमें लोकजीवन की वास्तविक परिस्थितियाँ, संघर्ष, भावनाएँ, उत्सव, रीति-रिवाज और जीवन-मूल्य सहज रूप में अभिव्यक्त होते हैं। हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का विशेष महत्व है, क्योंकि यह साहित्य को जनजीवन से जोड़ता है और उसकी विषयवस्तु, भाषा, शैली तथा अभिव्यक्ति को अधिक व्यापक और प्रभावशाली बनाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी साहित्य में लोक साहित्य के महत्व और उसकी स्वीकार्यता का अध्ययन किया गया है। इसमें लोकगीत, लोककथाएँ, जनकाव्य, लोकनाट्य, लोकनृत्य, कहावतें, मुहावरे और मौखिक काव्य परंपराओं जैसे विविध रूपों को सम्मिलित किया गया है। हिंदी लोक साहित्य की परंपरा अत्यंत प्राचीन है, जो समय के साथ निरंतर विकसित होती रही है। इसमें लोकमानस की आशाएँ, आकांक्षाएँ, संघर्ष, सुख-दुख, सामाजिक संबंध और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इस शोध-पत्र में लोक साहित्य की सामाजिक स्वीकृति, वर्तमान प्रासंगिकता तथा शिक्षा, जनसंचार, सांस्कृतिक आंदोलनों और सामाजिक चेतना के निर्माण में इसके योगदान पर विचार किया गया है। लोक साहित्य व्यक्ति और समाज के बीच भावनात्मक तथा सांस्कृतिक संबंध स्थापित करता है। इसके माध्यम से सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक अस्मिता और लोकमूल्यों को मजबूती प्राप्त होती है। इस प्रकार, प्रस्तुत शोध पत्र हिंदी साहित्य में लोक साहित्य के योगदान, महत्व और स्वीकार्यता पर व्यापक दृष्टि प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन साहित्यिक दृष्टि के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

मूल शब्द - लोक साहित्य, सांस्कृतिक परंपराएँ, सामूहिक चेतना, मौखिक काव्य

प्रस्तावना :

लोक साहित्य किसी भी समाज की सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक पहचान और जीवन-अनुभवों को व्यक्त करने वाला सशक्त माध्यम है। यह साहित्य सामान्य जनमानस से उत्पन्न होता है और उसी के जीवन, विश्वास, परंपराओं, संघर्षों, उत्सवों तथा सामाजिक व्यवहार को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। भारतीय समाज में लोक साहित्य की परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है। यह केवल साहित्यिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी विशेष महत्व रखता है। हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का स्थान अत्यंत विशिष्ट है, क्योंकि इसके माध्यम से भारतीय लोकजीवन की वास्तविकता, संवेदना, विचारधारा और सांस्कृतिक विरासत का सजीव चित्रण मिलता है। हिंदी लोक साहित्य का स्वरूप व्यापक और विविधतापूर्ण है। इसमें लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, मुहावरे, लोकगाथाएँ, लोकनाट्य, लोकनृत्य और मौखिक काव्य परंपराएँ सम्मिलित हैं। ये सभी रूप समाज के अलग-अलग पक्षों को सरल, स्वाभाविक और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सीधे जनजीवन से जुड़ा होता है। इसलिए इसमें समाज की वास्तविक परिस्थितियों, लोकविश्वासों, रीति-रिवाजों, जीवन-संघर्षों, संबंधों और मानवीय भावनाओं का सहज चित्रण मिलता है। यह समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों और सांस्कृतिक समूहों के अनुभवों को अपने भीतर समाहित करता है, जिससे इसकी व्यापकता और समृद्धि और अधिक बढ़ जाती है। हिंदी साहित्य के विकास में लोक साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। लोक साहित्य ने हिंदी साहित्य को भाषा, विषय, शैली और संवेदना के स्तर पर गहराई प्रदान की है। इसमें प्रयुक्त लोकभाषा, लोकप्रतीक, लोकमान्यताएँ और लोकसंस्कृति हिंदी साहित्य को जनसामान्य के अधिक निकट लाती हैं। यह साहित्य किसी एक लेखक, वर्ग या परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज की सामूहिक अभिव्यक्ति है। इसी कारण इसके माध्यम से भारतीय समाज की मूल प्रवृत्तियों, सांस्कृतिक धारा और ऐतिहासिक चेतना को समझने में सहायता मिलती है। समय के साथ हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की स्वीकार्यता भी बढ़ी है। आधुनिक हिंदी साहित्यकारों ने लोकजीवन, लोकभाषा और लोकसंस्कृति को अपनी रचनाओं में स्थान देकर लोक साहित्य के महत्व को और अधिक स्पष्ट किया है। इससे यह सिद्ध होता है कि लोक साहित्य केवल अतीत की परंपरा नहीं है, बल्कि वर्तमान साहित्य और समाज के लिए भी प्रासंगिक है। यह सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक निरंतरता और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध-पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है-

1. हिंदी साहित्य में लोक साहित्य के महत्व का विश्लेषण करना।
2. हिंदी साहित्य की मुख्यधारा में लोक साहित्य की स्वीकार्यता का अध्ययन करना।
3. हिंदी साहित्य के विकास में लोक साहित्य की भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. वर्तमान समाज में लोक साहित्य की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।
5. लोक साहित्य के सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक योगदान को समझना।

लोक साहित्य की परिभाषा और स्वरूप :

लोक साहित्य वह साहित्य है, जो सामान्य जनजीवन से उत्पन्न होता है और प्रायः मौखिक परंपरा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है। यह किसी एक लेखक की रचना न होकर समाज की सामूहिक चेतना, अनुभवों, आस्थाओं और परंपराओं की अभिव्यक्ति होता है। इसमें लोकमानस के सुख-दुख, संघर्ष, रीति-रिवाज, विश्वास और जीवन-मूल्य सहज रूप में प्रकट होते हैं। लोक साहित्य का स्वरूप अत्यंत सरल, स्वाभाविक और जनजीवन से जुड़ा हुआ होता है। इसमें लोकगीत, लोककथाएँ, कहावतें, मुहावरे, लोकगाथाएँ, लोकनाट्य और मौखिक काव्य रूप सम्मिलित होते हैं। इसका उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है, बल्कि समाज को सांस्कृतिक, नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा देना भी है। इसी कारण लोक साहित्य समाज की सांस्कृतिक धरोहर और जनमानस की सच्ची अभिव्यक्ति माना जाता है।

लोक साहित्य और शास्त्रीय साहित्य के बीच अंतर :

लोक साहित्य और शास्त्रीय साहित्य दोनों ही साहित्य की महत्वपूर्ण धाराएँ हैं, लेकिन इनके स्वरूप, भाषा, विषय और प्रस्तुति में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

- **साहित्यिक स्रोत** — लोक साहित्य सामान्य जनजीवन से उत्पन्न होता है। यह किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर समाज की सामूहिक अभिव्यक्ति होता है। इसका प्रसार प्रायः मौखिक परंपरा के माध्यम से होता है। इसके

विपरीत, शास्त्रीय साहित्य प्रायः विद्वानों, आचार्यों और शिक्षित वर्ग द्वारा रचा गया साहित्य होता है। यह मुख्यतः लिखित रूप में उपलब्ध होता है।

- **भाषा और शैली** — लोक साहित्य की भाषा सरल, सहज और जनसामान्य की बोलचाल से जुड़ी होती है। इसमें स्थानीय बोलियों, लोक प्रतीकों और जीवन से जुड़े उदाहरणों का प्रयोग अधिक मिलता है। जबकि शास्त्रीय साहित्य की भाषा अपेक्षाकृत परिष्कृत, गंभीर और अलंकारिक होती है। इसमें शास्त्रीय नियमों, छंदों और साहित्यिक परंपराओं का अधिक ध्यान रखा जाता है।
- **विषयवस्तु** — लोक साहित्य में सामान्य जन के जीवन, श्रम, संघर्ष, सुख-दुख, रीति-रिवाज, उत्सव और लोकविश्वासों का चित्रण होता है। यह सीधे समाज की वास्तविक स्थितियों से जुड़ा होता है। दूसरी ओर, शास्त्रीय साहित्य में धार्मिक, दार्शनिक, नैतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक विषयों की प्रधानता अधिक दिखाई देती है।
- **रचनाकार और स्वीकार्यता** — लोक साहित्य का कोई निश्चित लेखक प्रायः ज्ञात नहीं होता, क्योंकि यह समाज की सामूहिक रचना माना जाता है। वहीं शास्त्रीय साहित्य में रचनाकार का नाम, परंपरा और ग्रंथ का स्वरूप स्पष्ट होता है। लोक साहित्य की स्वीकार्यता जनसमुदाय में अधिक होती है, जबकि शास्त्रीय साहित्य की पहचान विद्वत् और साहित्यिक परंपरा में अधिक देखी जाती है।

इस प्रकार, लोक साहित्य जनजीवन की सहज अभिव्यक्ति है, जबकि शास्त्रीय साहित्य परंपरागत ज्ञान, विद्वत्ता और साहित्यिक अनुशासन का प्रतिनिधित्व करता है। दोनों का अपना महत्व है और दोनों मिलकर साहित्य को व्यापकता और गहराई प्रदान करते हैं।

हिंदी लोक साहित्य के प्रमुख रूप और उनकी विशेषताएँ :

हिंदी लोक साहित्य में अनेक रूप मिलते हैं, जिनके माध्यम से समाज के जीवन, विचार, भावनाएँ, परंपराएँ और सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है। ये रूप लोकजीवन से सीधे जुड़े होते हैं और सरल भाषा में जनमानस की अनुभूतियों को प्रस्तुत करते हैं।

- **लोकगीत** — लोकगीत हिंदी लोक साहित्य का सबसे लोकप्रिय रूप है। इनमें समाज के सुख-दुख, प्रेम, विरह, उत्सव, श्रम, धार्मिक आस्था और पारिवारिक संबंधों का चित्रण मिलता है। सोहर, बधाई, फाग, चैती, कजरी, आल्हा, भजन और विवाह गीत आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये गीत विशेष अवसरों, त्योहारों, विवाह, जन्म, फसल कटाई और धार्मिक अनुष्ठानों पर गाए जाते हैं।
- **लोककथाएँ** — लोककथाएँ लोक अनुभवों, कल्पना, नैतिक शिक्षा और सामाजिक मूल्यों को कहानी के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इनमें प्रेम, वीरता, त्याग, धर्म, लोकविश्वास और जनजीवन की समस्याओं का चित्रण मिलता है। लोककथाएँ मनोरंजन के साथ-साथ समाज को नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा भी देती हैं।
- **लोकगाथाएँ** — लोकगाथाएँ वीरता, संघर्ष, प्रेम और बलिदान से जुड़ी कथात्मक रचनाएँ होती हैं। आल्हा, ढोला-मारू और तेजाजी जैसी लोकगाथाएँ जनमानस में आज भी लोकप्रिय हैं। इनमें लोकनायकों के साहस, सामाजिक आदर्शों और लोकविश्वासों का प्रभावशाली वर्णन मिलता है।
- **लोकनाट्य** — लोकनाट्य लोक साहित्य का नाट्य रूप है, जिसमें अभिनय, संवाद, गीत और संगीत का समन्वय होता है। नौटंकी, स्वांग, रामलीला और रासलीला इसके प्रमुख रूप हैं। इनके माध्यम से धार्मिक, सामाजिक और ऐतिहासिक विषयों को सरल और मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।
- **कहावतें और मुहावरे** — कहावतें और मुहावरे लोक साहित्य की संक्षिप्त और प्रभावी अभिव्यक्ति हैं। इनमें लोकजीवन के अनुभव, व्यवहारिक ज्ञान और जीवन-दर्शन छोटे वाक्यों में व्यक्त होते हैं। ये भाषा को प्रभावशाली बनाते हैं और समाज की सोच को स्पष्ट करते हैं।

इस प्रकार हिंदी लोक साहित्य के ये प्रमुख रूप समाज की सांस्कृतिक परंपरा, लोकचेतना, भाषा और जीवन-मूल्यों को सुरक्षित रखते हैं। ये न केवल अतीत की धरोहर हैं, बल्कि आधुनिक हिंदी साहित्य के लिए भी प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की स्वीकार्यता और भूमिका :

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की स्वीकार्यता समय के साथ निरंतर बढ़ती रही है। प्राचीन समय से ही लोक साहित्य समाज की भावनाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक चेतना का प्रमुख माध्यम रहा है। यह साहित्य सामान्य जन की सोच, जीवन-

संघर्ष, समस्याओं, विश्वासों और अनुभवों को सरल एवं प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करता है। लोक साहित्य का महत्व इसलिए भी अधिक है, क्योंकि यह समाज के सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और सामाजिक पक्षों को सामने लाता है। जब शास्त्रीय साहित्य की पहुँच सीमित वर्ग तक थी, तब लोक साहित्य आम जनता की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन बना। इसके माध्यम से समाज की वास्तविक स्थितियाँ, लोकभाषा, लोकजीवन और लोकसंस्कृति साहित्य में स्थान प्राप्त कर सके। हिंदी साहित्य में लोक साहित्य ने भाषा, विषय और अभिव्यक्ति को अधिक व्यापक बनाया है। अनेक साहित्यकारों ने लोकगीतों, लोककथाओं, लोकभाषा, लोकविश्वासों और लोक प्रतीकों को अपनी रचनाओं में शामिल कर हिंदी साहित्य को जनजीवन से जोड़ा। इससे लोक साहित्य को साहित्यिक मान्यता मिली और वह मुख्यधारा के साहित्य का महत्वपूर्ण आधार बन गया। लोक साहित्य की भूमिका केवल साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक परंपराओं को सुरक्षित रखने, सामाजिक समरसता को बढ़ाने और सामूहिक चेतना को मजबूत करने में भी सहायक है। यह समाज को अपनी जड़ों, इतिहास और सांस्कृतिक पहचान से जोड़ता है। इस प्रकार हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की स्वीकार्यता और भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह साहित्य को जनसामान्य की संवेदना और अनुभवों से समृद्ध करता है।

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य के स्थान की ऐतिहासिक समीक्षा :

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का स्थान ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन काल में लोक साहित्य मुख्यतः मौखिक परंपरा पर आधारित था। यह सामान्य जनजीवन से उत्पन्न होकर लोकसमुदाय में ही प्रचलित होता था। लोकगीतों, लोककथाओं, कहावतों, गाथाओं और लोकनाट्यों के माध्यम से समाज की आस्थाएँ, परंपराएँ, सुख-दुख और जीवन-अनुभव पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते रहे। मध्यकाल में विशेष रूप से भक्ति आंदोलन के दौरान लोक साहित्य को नई दिशा और व्यापक स्वीकार्यता मिली। कबीर, सूरदास, तुलसीदास और मीरा जैसे संत कवियों ने लोकभाषा और सरल शैली का प्रयोग करके अपनी रचनाओं को जनसामान्य तक पहुँचाया। इनके साहित्य में लोकजीवन, लोकसंवेदना, भक्ति, सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस काल में लोक तत्वों ने हिंदी साहित्य को जनमुखी और लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य के पुनर्जागरण के साथ लोक साहित्य के प्रति दृष्टिकोण और अधिक व्यापक हुआ। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के समय से हिंदी साहित्य में जनजीवन, लोकभाषा और सामाजिक यथार्थ को महत्व दिया जाने

लगा। आगे चलकर महादेवी वर्मा, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद और अन्य साहित्यकारों ने लोकजीवन, ग्रामीण समाज, लोकसंस्कृति और लोकमानस को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। इससे लोक साहित्य को साहित्यिक पहचान और मुख्यधारा में स्वीकार्यता प्राप्त हुई। बीसवीं शताब्दी में लोक साहित्य के अध्ययन, संकलन और विश्लेषण पर अधिक ध्यान दिया गया। लोकगीतों, लोककथाओं, लोकगाथाओं और लोककलाओं को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में देखा जाने लगा। इस काल में लोक साहित्य ने शास्त्रीय और लिखित साहित्य के समानांतर अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित की। इस प्रकार हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का स्थान निरंतर विकसित होता रहा है। प्राचीन मौखिक परंपरा से लेकर आधुनिक साहित्यिक विमर्श तक लोक साहित्य ने हिंदी साहित्य को जनजीवन, भाषा, संस्कृति और सामाजिक चेतना से जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

लोक साहित्य की प्रमुख काव्य रचनाओं का साहित्यिक प्रभाव :

हिंदी लोक साहित्य की प्रमुख काव्य रचनाओं ने हिंदी साहित्य को गहराई और व्यापकता प्रदान की है। लोकगीत, लोकगाथाएँ, भक्ति काव्य और लोककथाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहीं, बल्कि इन्होंने समाज की भावनाओं, आस्थाओं, संघर्षों और सांस्कृतिक मूल्यों को साहित्य में स्थान दिया। कबीर के दोहे, सूरदास के पद, तुलसीदास की रचनाएँ और मीरा के भजन लोकभाषा, लोकसंवेदना और सरल अभिव्यक्ति के कारण जनसामान्य में अत्यधिक लोकप्रिय हुए। इन रचनाओं ने हिंदी साहित्य को धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि के साथ-साथ सामाजिक चेतना भी प्रदान की। लोक साहित्य से प्रभावित काव्य रचनाओं में प्रेम, भक्ति, समानता, न्याय, करुणा, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है। इन रचनाओं ने हिंदी कविता को केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक और मानवतावादी दृष्टिकोण भी दिया। लोकभाषा और सरल शैली के प्रयोग से साहित्य आमजन के निकट पहुँचा। इसी कारण लोक साहित्य की काव्य परंपरा ने हिंदी साहित्य की भाषा, विषयवस्तु और अभिव्यक्ति को अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनाया।

लोक साहित्य का हिंदी कविता, उपन्यास और नाटक में योगदान :

हिंदी कविता, उपन्यास और नाटक में लोक साहित्य का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी कविता में लोक साहित्य के प्रभाव से भाषा सरल, सहज और जनजीवन से जुड़ी हुई बनी। लोकगीतों, लोकप्रतीकों, लोकबिंबों और स्थानीय बोलियों के प्रयोग से कविता में लोकसंवेदना का विस्तार हुआ। निराला, पंत, महादेवी वर्मा और अन्य कवियों की रचनाओं में

लोकजीवन, प्रकृति, सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं का प्रभाव देखा जा सकता है। हिंदी उपन्यास में भी लोक साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उपन्यासों में ग्रामीण जीवन, लोकसंस्कृति, पारिवारिक संबंध, जातीय संरचना, सामाजिक विषमता और सामान्य जन के संघर्षों को प्रमुखता मिली। प्रेमचंद के गोदान और कर्मभूमि जैसे उपन्यासों में लोकजीवन और ग्रामीण समाज का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। इन रचनाओं में लोकभाषा, लोकरीति, किसान जीवन और सामाजिक समस्याओं को गहराई से प्रस्तुत किया गया है। हिंदी नाटक में भी लोक साहित्य का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। लोकनाट्य, रामलीला, रासलीला, नौटंकी और स्वांग जैसी परंपराओं ने हिंदी नाटक को अभिनय, संवाद, गीत और संगीत की दृष्टि से समृद्ध किया। इन लोक रूपों ने नाटक को अधिक जनप्रिय और प्रभावशाली बनाया। इस प्रकार लोक साहित्य ने हिंदी कविता, उपन्यास और नाटक तीनों विधाओं को भाषा, विषय, शैली और सामाजिक दृष्टि से समृद्ध किया है।

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का महत्व अत्यंत व्यापक और गहरा है। यह समाज की वास्तविकताओं, लोकमान्यताओं, परंपराओं, संवेदनाओं और सामूहिक अनुभवों को सरल तथा प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करता है। लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सीधे जनजीवन से जुड़ा हुआ साहित्य है। इसमें सामान्य व्यक्ति के सुख-दुख, संघर्ष, आस्था, उत्सव, रीति-रिवाज और जीवन-मूल्य स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त होते हैं। लोक साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक स्मृति और लोकचेतना का महत्वपूर्ण आधार भी है। इसके माध्यम से किसी समाज की भाषा, संस्कृति, इतिहास और जीवन-दृष्टि को समझा जा सकता है। हिंदी साहित्य में लोक साहित्य की स्वीकार्यता समय के साथ बढ़ी है और इसे साहित्य की मुख्यधारा में सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ है। हिंदी कविता, उपन्यास, नाटक और अन्य साहित्यिक विधाओं में लोक साहित्य ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लोकभाषा, लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, कहावतें और लोकनाट्य जैसे रूपों ने हिंदी साहित्य को अधिक जनमुखी, सरल और प्रभावशाली बनाया है। संत काव्य, भक्तिकालीन रचनाओं, ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यासों और लोकनाट्य परंपराओं में लोक साहित्य के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। लोक साहित्य शास्त्रीय साहित्य से अलग होते हुए भी हिंदी साहित्य को व्यापकता और गहराई प्रदान करता है। यह साहित्य समाज के सामान्य वर्गों की आवाज को अभिव्यक्ति देता है और जनमानस के संघर्षों, सपनों तथा आकांक्षाओं को सामने लाता है। आधुनिक समय में भी लोक साहित्य की प्रासंगिकता बनी हुई है,

क्योंकि यह समाज को अपनी सांस्कृतिक जड़ों, परंपराओं और सामूहिक पहचान से जोड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि लोक साहित्य हिंदी साहित्य की एक अनिवार्य और समृद्ध धारा है। इसका योगदान केवल साहित्यिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक निरंतरता और मानवीय मूल्यों के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोक साहित्य वर्तमान समाज का दर्पण भी है और भविष्य की सांस्कृतिक चेतना का आधार भी।

संदर्भ सूची :

1. चतुर्वेदी, रघुवीर - हिंदी लोक साहित्य का साहित्यिक महत्व, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
2. शुक्ल, कैलाश - लोक साहित्य और उसका सामाजिक प्रभाव, साहित्य अकादमी, वाराणसी, 2003
3. शर्मा, प्रमोद - हिंदी साहित्य में लोक साहित्य का स्थान, प्रभात प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018
4. सिन्हा, अशोक - लोक साहित्य और उसका इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, कानपुर, 2011
5. पांडेय, गिरीश - भक्ति काव्य और हिंदी लोक साहित्य, पेंगुइन बुक्स, जयपुर, 2017
6. कुमार, संजय - हिंदी लोक साहित्य में नारीवाद की भूमिका, ग्रंथनगर, लखनऊ, 2015
7. वर्मा, सुरेश - हिंदी साहित्य में लोककाव्य का योगदान, शिक्षा प्रकाशन, दिल्ली, 2019
8. त्रिपाठी, बिपिन - हिंदी लोक साहित्य की शास्त्रीय साहित्य से तुलना, हिंदी साहित्य भवन, पटना, 2014

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975

Impact Factor: 8.152